एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 08 (अगस्त, 2026)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

मूंग की खेती

*संदीप कुमार चौधरी[1], ममता देवी चौधरी[2], प्रीती वर्मा[1], धीरज कुमार[1] एवं सरोज चौधरी[1]
[1]विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केंद्र, टोंक, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत
[2]विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केंद्र, मौलासर, कृषि विश्वविधालय, जोधपुर, राजस्थान, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: sandeepkuri2018@gmail.com

राजस्थान में मूंग की खेती मुख्य रूप से खरीफ मौसम में वर्षा आधारित क्षेत्रों में की जाती है। मूंग एक महत्वपूर्ण दलहनी फसल है, जो कम अवधि में पकने वाली तथा कम पानी में अच्छी उपज देने वाली फसल है। यह भूमि की उर्वरता बढ़ाने के साथ-साथ किसानों को अतिरिक्त आय प्रदान करती है। उन्नत किस्मों, संतुलित पोषण, समय पर बुवाई तथा उचित कीट एवं रोग प्रबंधन अपनाकर मूंग का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

जलवायु- मूंग के लिए गर्म और शुष्क जलवायु होनी चाहिए। अंकुरण के लिए 25-30 डिग्री सेंटीग्रेट और वर्द्धी के लिए 30-35 डिग्री सेंटीग्रेट तापमान होनी चाहिए। ज्यदा वर्षा और लगातार बादल रहने से फूल जड़ जाते है और पिला मोजेक, पत्ती धब्बा जसे फफूंदी रोग फेल जाते है। यदि पकते समय मौसम शुष्क और तेज धूप दाना की चमक बढाती है।

भूमि का चुनाव:- मूंग की खेती अच्छी जल निकास वाली बलुई दोमट तथा दोमट भूमि में सफलतापूर्वक की जा सकती है। जलभराव वाली भूमि इसके लिए उपयुक्त नहीं होती। भूमि का पी.एच. 6.0 से 7.5 होना चाहिए।

खेत की तैयारी:- मानसून की प्रथम वर्षा के बाद 1-2 बार अच्छी जुताई करके खेत को भुरभुरा बना लें। इसके बाद पाटा चलाकर खेत को समतल कर बुवाई के लिए तैयार करें।

उन्नत किस्में:-

उन्नत किस्में	परिपक्वता अवधि (दिन)	औसतउपज(क्विं.)	विशेषताएँ
आर.एम.जी. 975	65-70	9-10	यह किस्म पीत शिरा मोजेक वाइरस, वेब ब्लाइट, एन्थेक्नोज व जडगांठ सूत्रकृमि के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है।
एम.एस.जे. 118	65-70	9-10	यह किस्म पीत शिरा मोजेक वाइरस, छाछ्या, शुष्क जड़ गलन व जडगांठ सूत्रकृमि के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है।
आई.पी.एम. 410-3 (शिखा)	63-68	10-12	यह किस्म पीत चितकबरा रोग के लिए प्रतिरोधी है। खरीफ व जायद की फसल हेतु उपयुक्त है।
आई.पी.एम. 205-7 (विराट)	60-65	10-11	यह किस्म पीत चितकबरा रोग के लिए प्रतिरोधी है। खरीफ व जायद की फसल हेतु उपयुक्त है।
जी.ए.एम. 5	60-70	9-11	यह किस्म जायद व खरीफ दोनों ऋतु हेतु उपयुक्त है। किस्म पीत शिरा विषाणु रोधी है।
जी.एम. 6	70-75	11-12	यह किस्म सभी वायरस रोग एवं पर्ण कुंचन के लिए प्रतिरोधी पायी गयी है। यह किस्म जायद व खरीफ दोनों ऋतुओं के लिए उपयुक्त है।
जी.एम. 7	75-80	10-11	जायद एवं खरीफ दोनों मौसम में बुवाई हेतु उपयुक्त किस्म है। यह किस्म पीत मोजेक रोग के प्रति प्रतिरोधक है।
एम.एच. 1142	65-70	12	यह किस्म पीले मोजेक वायरस रोग के लिए प्रतिरोधी पाई गई है।

बुवाई का समय:- मूंग की बुवाई जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के तीसरे सप्ताह तक करें। समय पर बुवाई करने से अधिक उत्पादन प्राप्त होता है।

बीज दर व बोने का तरीका:- मूंग के लिए 12-15 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होता है। कतार से कतार की दूरी 30 सेमी तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी रखें। बीज को 3-4 सेमी गहराई पर बोएँ।

बीजोपचार:- कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम, फिप्रोनिल 5 एस.सी. 5 मि.ली. एवं एन.पी.के. कन्सोर्टिया 10 मि.ली. प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से प्रयोग करें। सफेद मक्खी एवं पीला

खाद एवं उर्वरक:- बुवाई से पूर्व 5-10 टन सड़ी हुई गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर खेत में मिला दें। मूंग की फसल में 20 किलोग्राम नत्रजन एवं 40 किलोग्राम फास्फोरस प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के समय दें।

गंधक की कमी वाली भूमि में 20 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर दें।

जस्ता की कमी वाली भूमि में 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई पूर्व खेत में मिलाएँ।

खरपतवार नियंत्रण:- पेंडीमेथिलीन 30 ई.सी. 1.0 लीटर सक्रिय तत्व प्रति हैक्टेयर बीज बुवाई के तुरन्त बाद (0-1 दिन) 600-800 लीटर पानी में घोलकर स्प्रे करें। 30 दिन बाद एक बार निराई-गुड़ाई अवश्य करें।

सिंचाई प्रबंधन:- खरीफ मौसम की फसल सामान्यतः वर्षा पर निर्भर रहती है। यदि वर्षा न हो तो पहली सिंचाई बुवाई के 20-25 दिन बाद तथा दूसरी सिंचाई फूल आने की अवस्था पर करें। आवश्यकता अनुसार हल्की सिंचाई दें।

पौध संरक्षण:-

सफेद मक्खी एवं माहू: यह कीट पत्तियों का रस चूसते हैं तथा पीला मोजेक रोग फैलाते हैं। इनके नियंत्रण हेतु डायमिथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर या इमिडॉक्लोप्रिड 17.8 एस.एल.150 मि.ली. प्रति हैक्टेयर छिड़काव करें।

फली छेदक कीट: इसकी सूंडी फूलों एवं फलियों को नुकसान पहुँचाती है। नियंत्रण हेतु इंडोक्साकार्ब 14.5 एस.सी. 500 मि.ली. या थायोमेथाक्सॉम 5G 1 ग्राम/लीटर का छिड़काव करें।

पीला मोजेक रोग: इस रोग में पत्तियों पर पीले रंग के चकत्ते बन जाते हैं तथा पौधों की वृद्धि रुक जाती है। रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर नष्ट करें तथा सफेद मक्खी का नियंत्रण करें। रोग प्रतिरोधी किस्मों का प्रयोग करें। डायमिथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर या इमिडॉक्लोप्रिड 17.8 एस.एल.0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

पत्ती धब्बा रोग या चित्ती जीवाणु रोग: पत्तियों पर भूरे रंग के धब्बे बनते हैं जो बाद में बढ़कर पत्तियों को सुखा देते हैं। नियंत्रण हेतु नियंत्रण हेतु कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 डब्ल्यू.पी. 2कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर का छिड़काव करें। या मैन्कोजेब 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

चूर्णिल आसिता (पाउडरी मिल्ड्यू) रोग: पत्तियों पर सफेद चूर्ण जैसा पदार्थ दिखाई देता है। अधिक प्रकोप होने पर पत्तियाँ पीली होकर झड़ जाती हैं। नियंत्रण हेतु 2.5 किलो घुलनशील गन्धक प्रति हैक्टेयर या पेनकोनाजॉल 10 प्रतिशत ई.सी. की 0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी के घोल का पहला छिड़काव रोग के लक्षण दिखाई देते ही एवं दूसरा छिड़काव 10 दिन के अन्तराल पर कीजिये अथवा प्रति हैक्टेयर 25 किलो गन्धक चूर्ण का भुरकाव कीजिये।

जड़ गलन रोग: रोग के प्रकोप से पौधे सूखने लगते हैं तथा जड़ें सड़ जाती हैं। नियंत्रण हेतु ट्राइकोडर्मा से बीज एवं भूमि उपचार करें तथा आवश्यकता पड़ने पर कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर जड़ों में ड्रेंचिंग करें।

कटाई एवं मड़ाई:- जब 80 प्रतिशत फलियाँ पककर काली अथवा भूरी हो जाएँ तब फसल की कटाई करें। कटाई के बाद फसल को अच्छी तरह सुखाकर मड़ाई करें।

औसत उपज:- वर्षा आधारित परिस्थितियों में 8-10 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तथा उन्नत तकनीक अपनाने पर 10-12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज प्राप्त की जा सकती है। भंडारण के लिए बीज को भण्डारण करने से पहले अच्छी तरह सुखा लेना चाहिए बीज में 10 प्रतिशत से नमी की अवस्था में भण्डारित कर सकते है। सुखी नीम की पत्ती को बीज में मिलाकर भण्डारण करने से कीटो से सुरक्षा की जा सकती है।